Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

हिंदी भाषी क्षेत्रों के विद्यालयों में हिंदी भाषा की प्रतिनिधित्वता : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. योगेन्द्र जैन*

* अतिथि विद्वान (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, शामगढ़ (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – यह अध्ययन भारत के हिंदी भाषी क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में हिंदी भाषा के सामाजिक भाषाई प्रतिनिधित्व की जांच करता है। कक्षा अवलोकन, शिक्षकों और छात्रों के साथ साक्षात्कार और पाठ्यचर्या सामग्री के विश्लेषण सहित गुणात्मक पद्धतियों पर आधारित शोध यह पता लगाता है कि शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी की स्थिति, अभ्यास और धारणा कैसी है। प्रमुख क्षेत्रीय भाषा होने के बावजूद, औपचारिक शिक्षा में हिंदी की भूमिका अक्सर अंग्रेजी पर बढ़ते जोर से दब जाती है, जिसे अक्सर ऊपर की ओर गतिशीलता, आधुनिकता और वैश्विक पहुंच से जोड़ा जाता है। यह अध्ययन आलोचनात्मक रूप से जांच करता है कि इस तरह की गतिशीलता भाषा प्रथाओं, शैक्षणिक विकल्पों और छात्रों की पहचान निर्माण को कैसे प्रभावित करती है।

शोध से पता चलता है कि हिंदी को कई सरकारी स्कूलों में औपचारिक रूप से शिक्षा के माध्यम के रूप में मान्यता प्राप्त है, यह अक्सर अभिजात वर्ग और निजी संस्थानों में हाशिए पर है जहाँ अंग्रेजी का बोलबाला है। इसके अलावा, कक्षाओं में हिंदी का उपयोग व्यापक सामाजिक-राजनीतिक विचारधाराओं, वर्ग भेद और भाषाई पदानुक्रमों द्वारा आकार लेता है। शिक्षकों के दृष्टिकोण, नीतिगत प्रवचन और छात्रों की आकांक्षाएँ सामूहिक रूप से एक जटिल वातावरण में योगदान करती हैं जहाँ हिंदी, सांस्कृतिक रूप से निहित होने के बावजूद, अंग्रेजी की तुलना में कम मूल्यवान हो सकती है।

भाषा की विचारधारा और सत्ता के ढांचे के भीतर हिंदी के प्रतिनिधित्व को स्थापित करके, अध्ययन भाषाई राष्ट्रवाद और वैश्विक भाषाई पूंजी के बीच तनाव को उजागर करता है। यह स्कूली शिक्षा में हिंदी के प्रतीकात्मक और व्यावहारिक कार्यों की जांच करता है। इसका उपयोग संचार के लिए कैसे किया जाता है, यह ज्ञान को कैसे मध्यस्थ करता है, और यह शिक्षार्थियों की सामाजिक-भाषाई पहचान को कैसे आकार देता है। अंतत: शोध एक अधिक संतुलित और समावेशी भाषा नीति की आवश्यकता को रेखांकित करता है जो अंग्रेजी से जुड़ी आकांक्षाओं को संबोधित करते हुए हिंदी के सांस्कृतिक महत्व की पुष्टि करती है। यह कार्य उत्तर-औपनिवेशिक समाजों में भाषा और शिक्षा पर व्यापक चर्चा में योगदान देता है, जहाँ भाषा केवल शिक्षा का साधन नहीं है, बल्कि सामाजिक बातचीत और पहचान की राजनीति का स्थल है।

प्रस्तावना – शैक्षिक अनुभव, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक गतिशीलता तक पहुँच को आकार देने में भाषा एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। भारत जैसे बहुभाषी समाजों में, शिक्षा में भाषा का उपयोग शक्ति, वर्ग और राष्ट्रीय पहचान के मुद्दों से गहराई से जुड़ा हुआ है। हिंदी, भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा और केंद्र सरकार की आधिकारिक भाषा होने के नाते, हिंदी भाषी क्षेत्रों के सांस्कृतिक और संचार जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हालाँकि, स्कूली सेटिंग के भीतर विशेष रूप से वैश्वीकरण और बढ़ते अंग्रेजी प्रभुत्व के संदर्भ में हिंदी का प्रतिनिधित्व और स्थिति जटिल बदलावों से गुजर रही है।

भारत का भाषाई परिदृश्य बहुत विविधताओं से भरा हुआ है, संविधान ने आठवीं अनुसूची के तहत 22 आधिकारिक भाषाओं को मान्यता दी है। इनमें से, हिंदी सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा के रूप में एक विशिष्ट स्थान रखती है, 2011 की जनगणना के अनुसार , लगभग 43.6 प्रतिषत आबादी इसे अपनी मातृभाषा के रूप में पहचानती है। अपनी व्यापकता से परे, हिंदी राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में कार्य करती है, जो संचार के माध्यम और सांस्कृतिक एकता के प्रतीक के रूप में कार्य करती है।[1]

इसके अलावा, हिंदी का राष्ट्रीय पहचान से जुड़ाव सभी समुदायों में एक जैसा नहीं है। प्यू रिसर्च सेंटर के एक अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश हिंदू (59) प्रतिशत हिंदी बोलने को सच्चे भारतीय होने के लिए बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं, यह भावना अन्य धार्मिक समूहों में कम प्रचलित है। इस तरह के निष्कर्ष पहचान के एक मार्कर के रूप में भाषा की बहुमुखी प्रकृति को रेखांकित करते हैं, जो धर्म, क्षेत्र और ऐतिहासिक संदर्भ जैसे कारकों से प्रभावित होती है।[2]

मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले जैसे हिंदी भाषी क्षेत्रों में, यह गतिशीलता सरकारी स्कूलों और निजी अंग्रेजी-माध्यम संस्थानों के बीच अंतर में विशेष रूप से दिखाई देती है। जबकि केंद्रीय विद्यालयों सहित सरकारी स्कूल अक्सर शिक्षा और सांस्कृतिक संचरण के माध्यम के रूप में हिंदी का उपयोग करते हैं, निजी स्कूल आकांक्षा और सामाजिक उन्नति की भाषा के रूप में अंग्रेजी पर जोर देते हैं। इससे एक सामाजिक-भाषाई विभाजन पैदा होता है जो युवाओं के बीच व्यापक वर्ग-आधारित असमानताओं और बदलते सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाता है।

शोध उद्देश्य – हिन्दी भाषा क्षेत्र मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के शामगढ़ शहर के निजी और केंद्रीय विद्यालय में हिन्दी भाषा की स्थिति का अध्ययन

करना।

परिकल्पना – निजी स्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में केन्द्रिय विद्यालय के विद्यार्थी हिन्दी भाषा का अधिक प्रयोग करते है।

शोध पद्धति – यह अध्ययन समाज भाषा विज्ञान दृष्टिकोण पर आधारित तुलनात्मक गुणात्मक शोध पर आधारित है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि मंदसौर जिले के हिंदी भाषी क्षेत्र में शैक्षिक संदर्भों में हिंदी की स्थिति, प्रतिनिधित्व और अभ्यास कैसे किया जाता है, जिसमें शामगढ़ कस्बे पर ध्यान केंद्रित किया गया है। दो प्रकार के स्कूलों में भाषा प्रथाओं का विश्लेषण करने के लिए साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन के माध्यम से दोनों विद्यालयों से 15–15 छात्रों का चयन किया गया है और साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आकड़े एकत्र किया गया है। सभी प्रतिभागियों से सूचित सहमति प्राप्त की गई, तथा पूरे शोध के दौरान गोपनीयता बनाए रखी गई। प्रतिभागियों और शामिल संस्थानों की गोपनीयता और गरिमा को ध्यान में रखते हुए डेटा एकत्र किया गया।

शोध विश्लेषण – 30 विद्यार्थियों 15 एक निजी अंग्रेजी माध्यम स्कूल से और 15 एक सरकारी केन्द्रीय विद्यालय से यह तुलनात्मक अध्ययन इस बात पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि एक हिन्दी भाषी क्षेत्र में दो अलग–अलग शैक्षिक परिवेशों में हिन्दी का प्रतिनिधित्व, महत्व और अभ्यास किस प्रकार किया जाता है।

भाषा उपयोग पैटर्न – निजी स्कूल के छात्र कक्षा में अधिकतर अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं, खास तौर पर निर्देश और औपचारिक कार्यों के दौरान। हिंदी का प्रयोग अनौपचारिक रूप से सहपाठियों के बीच किया जाता है, लेकिन शैक्षणिक संदर्भों में इसे हतोत्साहित किया जाता है। कुछ छात्र कोड–स्विच करते हैं, लेकिन अक्सर अंग्रेजी में 'प्रदर्शन' करने का दबाव महसूस करते हैं।

केन्द्रीय विद्यालय के छात्र हिंदी और अंग्रेजी का अधिक संतुलित उपयोग। हिंदी का उपयोग शिक्षण, वार्तालाप और सांस्कृतिक गतिविधियों में किया जाता है। अंग्रेजी का सम्मान किया जाता है, लेकिन हिंदी को कलंकित नहीं किया जाता। छात्र भाषाई रूप से अधिक लचीले और सांस्कृतिक रूप से निहित है।

हिंदी के प्रति दृष्टिकोण – निजी स्कूल के छात्र हिंदी को करियर के अवसरों के लिए कम मूल्यवान मानते हैं। कुछ लोग औपचारिक सेटिंग में हिंदी को धाराप्रवाह बोलने में शर्मिंदगी व्यक्त करते हैं। हिंदी को 'व्यक्तिगत' या 'स्थानीय' के रूप में देखा जाता है, जबकि अंग्रेजी को 'पेशेवर' और 'वैश्विक' के रूप में देखा जाता है।

केवी के छात्र हिंदी बोलने में ज्यादा गर्व महसूस करें। कई लोग इसे अपनी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा मानते हैं। वे अंग्रेजी के महत्व को भी पहचानते हैं, लेकिन इसे हिंदी के इस्तेमाल के लिए खतरा नहीं मानते।

पहचान और आकांक्षाएं – निजी स्कूल के छात्र अंग्रेजी को आधुनिकता, सफलता और वैश्विक पहुंच से जोड़ते हैं। हिंदी भावनात्मक रूप से महत्वपूर्ण है, लेकिन आकांक्षाओं से जुड़ी नहीं है।

केवी के छात्र हिंदी को परंपरा और शिक्षा के बीच एक सेतु के रूप में देखते हैं। वे दोनों भाषाओं में महारत हासिल करने की इच्छा रखते हैं, द्विभाषी होने को अपनी ताकत मानते हैं।

सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व – निजी स्कूल हिंदी साहित्यिक या सांस्कृतिक विषय–वस्तु पर न्यूनतम जोर दिया जाता है। हिंदी केवल पाठ्य पुस्तकों तक ही सीमित है।

केवी हिंदी संस्कृति का मजबूत एकीकरण हिंदी दिवस, हिंदी वाद–विवाद और साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन।

1 कक्षा में भाषा का प्रयोग

भाषा प्रयोग	निजी स्कूल (n=15)	केन्द्रीय विद्यालय (n=15)	कुल (n=30)
मुख्यत: अंग्रेजी	12 (80%)	5 (33%)	17 (57%)
मुख्यत: हिंदी	1 (7%)	6 (40%)	7 (23%)
हिंदी और अंग्रेजी	2 (13%)	4 (27%)	6 (20%)

निजी स्कूलों में कक्षा शिक्षण में अंग्रेजी का बोलबाला है। केवी के छात्र हिंदी और कोड–स्विचिंग के अधिक समावेश के साथ अधिक संतुलित उपयोग दिखाते हैं।

2 हिंदी के प्रति दृष्टिकोण

कथन	सहमत–निजी	सहमत–के.वी	कुल
हिंदी हमारी सांस्कृतिक पहचान के लिए महत्वपूर्ण है	5 (33%)	13 (87%)	18 (60%)
भविष्य में सफलता के लिए अंग्रेजी बेहतर है	14 (93%)	11 (73%)	25 (83%)
स्कूलों में हिन्दी का प्रयोग अधिक होना चाहिए	3 (20%)	9 (60%)	12 (40%)

दोनों स्कूलों के अधिकांश छात्र मानते हैं कि अंग्रेजी सफलता की कुंजी है, लेकिन केवी के छात्र हिंदी के प्रति अधिक भावनात्मक और सांस्कृतिक लगाव व्यक्त करते हैं।

3 अनौपचारिक संचार में भाषा (साथियों के साथ)

भाषा	निजी	केवी	कुल
हिन्दी	10 (67%)	14 (93%)	24 (80%)
अंग्रेजी	2 (13%)	0 (0%)	2 (7%)
मिश्रित	3 (20%)	1 (7%)	4 (13%)

अनौपचारिक सहपाठियों के साथ बातचीत में, यहां तक कि निजी स्कूल के छात्रों के बीच भी हिंदी का बोलबाला है, जो कक्षा की भाषा संबंधी प्राथमिकताओं के बावजूद सामाजिक पहचान में इसकी जड़ें होने का संकेत देता है।

4 आत्म–धारणा और आत्मविश्वास

धारणा कथन	निजी (हाँ)	केवी (हाँ)	कुल
'मैं हिंदी की अपेक्षा अंग्रेजी में बोलने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करता हूं।'	11 (73%)	4 (27%)	15 (50%)
'मुझे सार्वजनिक रूप से हिंदी बोलने में गर्व महसूस होता है।'	4 (27%)	12 (80%)	16 (53%)
'हिंदी का प्रयोग करने से मुझे कम आधुनिकता का अहसास होता है।'	9 (60%)	3 (20%)	12 (40%)

निजी स्कूल के छात्र अंग्रेजी को आत्मविश्वास और आधुनिकता से जोड़ते हैं, जबकि केवी के छात्र हिंदी बोलने में गर्व महसूस करते हैं और नकारात्मक धारणाओं से कम प्रभावित होते हैं।

5 स्कूल में सांस्कृतिक प्रदर्शन

हिंदी सांस्कृतिक गतिविधियाँ	निजी (हाँ)	केवी (हाँ)
हिन्दी दिवस मनाया गया	4 (27%)	14 (93%)
हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भागीदारी	3 (20%)	10 (67%)
पाठ्यपुस्तक से परे पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य	2 (13%)	9 (60%)

केवी कार्यक्रमों और साहित्य के माध्यम से हिंदी भाषा और संस्कृति को अधिक सक्रियता से बढ़ावा देता है। निजी स्कूल अकादमिक हिंदी पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे सांस्कृतिक जुड़ाव सीमित हो जाता है।

निष्कर्ष :

1. उपरोक्त परिकल्पना का परिक्षण करने पर सिध्द होता है कि केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थी निजी स्कूल के विद्यार्थीयों की तुलना में हिन्दी भाषा का अधिक प्रयोग करते है। अत: यह परिकल्पना सिध्द होती हैं।

2. भाषाई पदानुक्रम: अंग्रेजी को प्रतीकात्मक पूंजी माना जाता है, खासकर निजी स्कूलों में। हिंदी को भावनात्मक रूप से महत्वपूर्ण लेकिन कम आकांक्षात्मक माना जाता है।

3. पहचान संबंधी तनाव: निजी स्कूलों में छात्र अपनी घरेलू भाषा (हिंदी) और स्कूल की प्रतिष्ठा संबंधी भाषा (अंग्रेजी) के बीच संघर्ष का अनुभव करते हैं।

4. संतुलित द्विभाषिकता: केवी के छात्रों में हिंदी और अंग्रेजी दोनों को अपनाने की अधिक संभावना है, जो एक स्वस्थ द्विभाषी पहचान का संकेत है।

5. नीतिगत निहितार्थ: ऐसी समावेशी भाषा नीतियों की आवश्यकता है जो अंग्रेजी के कार्यात्मक महत्व का विरोध किए बिना हिंदी की स्थिति को ऊंचा उठाएं।

यह डेटा संचालित समाज-भाषाई व्याख्या भारतीय कक्षाओं में पहचान की भाषा और अवसर की भाषा के बीच की खाई को पाटने की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. https://journals.sagepub.com/doi/10.1177/23938617211014660?icid=int.sj-full-text.similar-articles.2&utm_source=chatgpt.com
2. https://www.pewresearch.org/short-reads/2021/07/20/for-most-of-indias-hindus-religious-and-national-identities-are-closely-linked/
3. https://scientiatutorials.in/the-role-of-indian-literature-in-shaping-national-identity-a-cultural-odyssey/
4. Khan, S., & Jayaraj, T. (2024). From colonial legacy to contemporary reality: Attitudes towards English and Hindi hegemony in India. Humanities and Social Sciences Communications, 11, Article 1594. https://doi.org/10.1057/s41599-024-02231-4

****